अच्छे पड़ोसी के गुण

प्रिय विद्यार्थियों ,
हम सबने जीवन में अनेक पड़ोस बदले हैं | पड़ोसियों के साथ हमारा अनुभव अच्छा और बुरा दोनों तरह का रहा है आज हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि पड़ोसियों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए |

- पड़ोसियों के प्रति सहयोग की भावना |
- प्रेम एवं सौहार्द |
- विश्वसनीय, उदार एवं संवेदनशील |
- ईर्ष्या व द्वेष नहीं होना चाहिए |
- आवश्यकता के समय सहायता का भाव |
- क्षमा व ईमानदारी |

आइये अब हम अच्छे पड़ोसी के गुण नीचे दिए लिंक से पढ़तें हैं—

https://youtu.be/jRk5_yBumrk

अच्छे पड़ोसी के गुण
नि: स्वार्थी
आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने वाला
संवेदनशील
मददगार एवं दयालु
ईर्ष्या न करने वाला
उदार
सहनशील

‘अच्छे पड़ोसी के गुण’ पाठ गोपाल चतुर्वेदी द्वारा हिंदी साहित्य की निबन्ध विधा में लिखित एक व्यंग्यात्मक लेख है | प्रस्तुत पाठ में लेखक ने प्रभावपूर्ण और सरस ढंग से पड़ोसियों के कुछ ऐसे व्यवहारों पर व्यंग्य किया है जिनके द्वारा वे सहयोग और सद्भावना का दिखावा करते हैं परन्तु इस दिखावे के पीछे उनके मन में अपने पड़ोसी को हानि पहुँचाने का भाव छिपा रहता है |

लेखक ने स्पष्ट किया है कि व्यक्ति और देश के पड़ोसियों के व्यवहार में कोई ख़ास अंतर नहीं है और जिस प्रकार हमारे पड़ोसी हमारे प्रति प्रेम और सद्भावना रखतें हैं वैसे ही हमारे पड़ोसी देशों को भी आपस में हिल-मिलकर अमन-चैन से रहना चाहिए | परन्तु आज भी चाहे पड़ोसी हो या देश दोनों एक- दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप करते हैं |

लेखक अपने घर की बेकार पड़ी वस्तुओं; जैसे-पुराने जूते, प्लास्टिक के थैले, टूटी शीशियाँ और बरसों से एकत्र की गईं वे वस्तुएँ जिन्हें कबाड़ी भी नहीं लेता है, को धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा करके अपने पड़ोसी की ओर फेंक देता था | उसका पड़ोसी कहता था कि जाने कौन जंगली उसके घर में सड़ा – गला कूड़ा फेंक जाता है | तब लेखक अनजान होने का अभिनय करते हुए कूड़ा फेंकने वाले को जमकर कोसता है| अगले ही दिन लेखक को भी अपने घर के सामने कचरे का ढेर देखने को मिलता | लेखक कचरे के ढेर को देखकर बददुआएँ देता था | इस प्रकार कूड़े के ढेर का आदान-प्रदान चलता रहता था |

Scanned with CamScanner

पड़ोसी धर्म निभाने के क्रम में महिलाएँ एक-दूसरे से वस्तुओं का आदान-प्रदान करती रहती थी | इसी क्रम में लेखक की पत्नी ने अपनी पड़ोसन से 'तूश' की शाल उधार ली थी, जो बहुत महँगी थी | उस शाल पर चटनी का दाग लग गया , जिसे छुड़ाने में लेखक के डेढ़ सौ रूपये खर्च हो गए | फिर भी पड़ोसन ने शाल में लगे दाग का कारण ईर्ष्या और स्पर्धा को माना | दोनों ने पूर्व में ली गई वस्तुओं के लिए एक-दूसरे को खूब ताने दिए | परिणामत: दोनों में बातचीत बंद हो गई ।

केबल टी०वी० नई पीढ़ी के लिए कितना नुकसानदेह है | इसका दुष्प्रभाव बच्चों की पढ़ाई पर तो पड़ता ही है, उनकी नज़र भी कमज़ोर होती है | लिहाजा मौका मिलते ही उनकी 'केबल' का तार काट देते हैं | तर्क ये दिया जाता है कि उन्हें भी नई पीढ़ी का ख़याल है | ऐसा करने पर अक्सर पड़ोसी की केबल का तार भी धराशायी पाया जाता है | इस प्रकार पड़ोसी धर्म निभाने का सिलसिला चलता रहता है |

व्यक्ति और देश के पड़ोसियों के व्यवहार में कोई ख़ास अंतर नहीं है | देश की इकाई भी व्यक्तियों के समूह से ही बनती है | जैसे हमारे पड़ोसी हमारे प्रति प्रेम और सद्भावना रखते हैं वैसे ही हमारे पड़ोसी देश भी | शांति,अहिंसा और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का उसूल हर पड़ोसी देश संसार के सामने सार्वजनिक तौर पर अपनाता है | यह दीगर है कि कभी-कभार सीमा-क्षेत्र में आतंकवादी गोलाबारी कर लें | उसके जासूस शहरों में बमबारी की योजना बनाएँ |थोड़ी-बहुत आतिशबाजी तो होती रहनी चाहिए| एक-दूसरे के बारे में जानने की इच्छा तो स्वाभाविक जिज्ञासा है |अपनी तो एक ही आकांक्षा है कि हमें अपने पड़ोसी से इतना लगाव है तो हम भी अपने व्यवहार में सुधार लाएँ | ताली एक हाथ से तो बजती नहीं है | दोनों हिल-मिलकर अमन-चैन से रहें |

➢ यह कार्य अपनी उत्तर-पुस्तिका में करें | (व्याकरणिक बिन्दुओं पर आधारित आरेख)

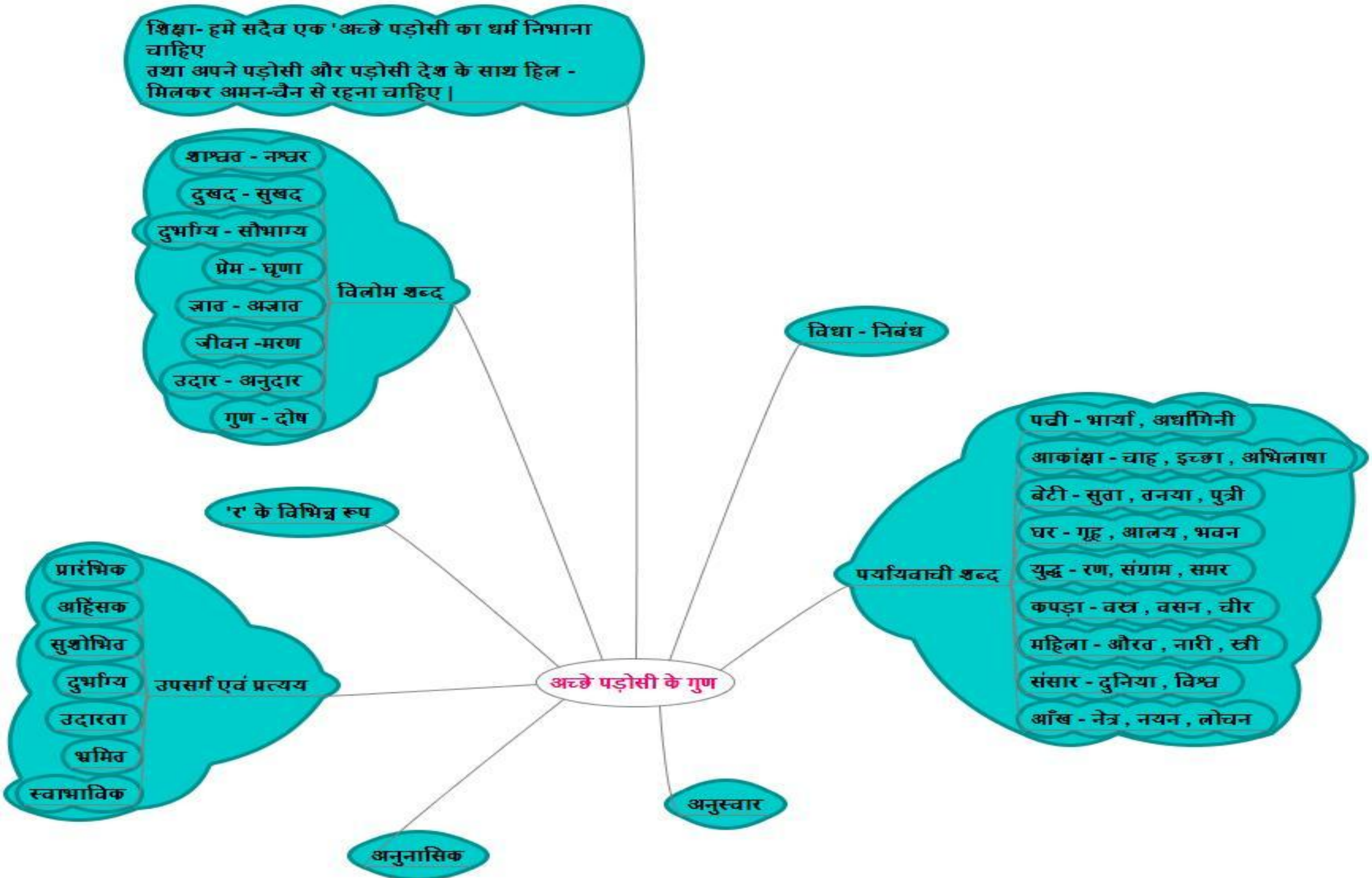

तुलनात्मक अध्ययन (अच्छे एवं बुरे पड़ोसी)

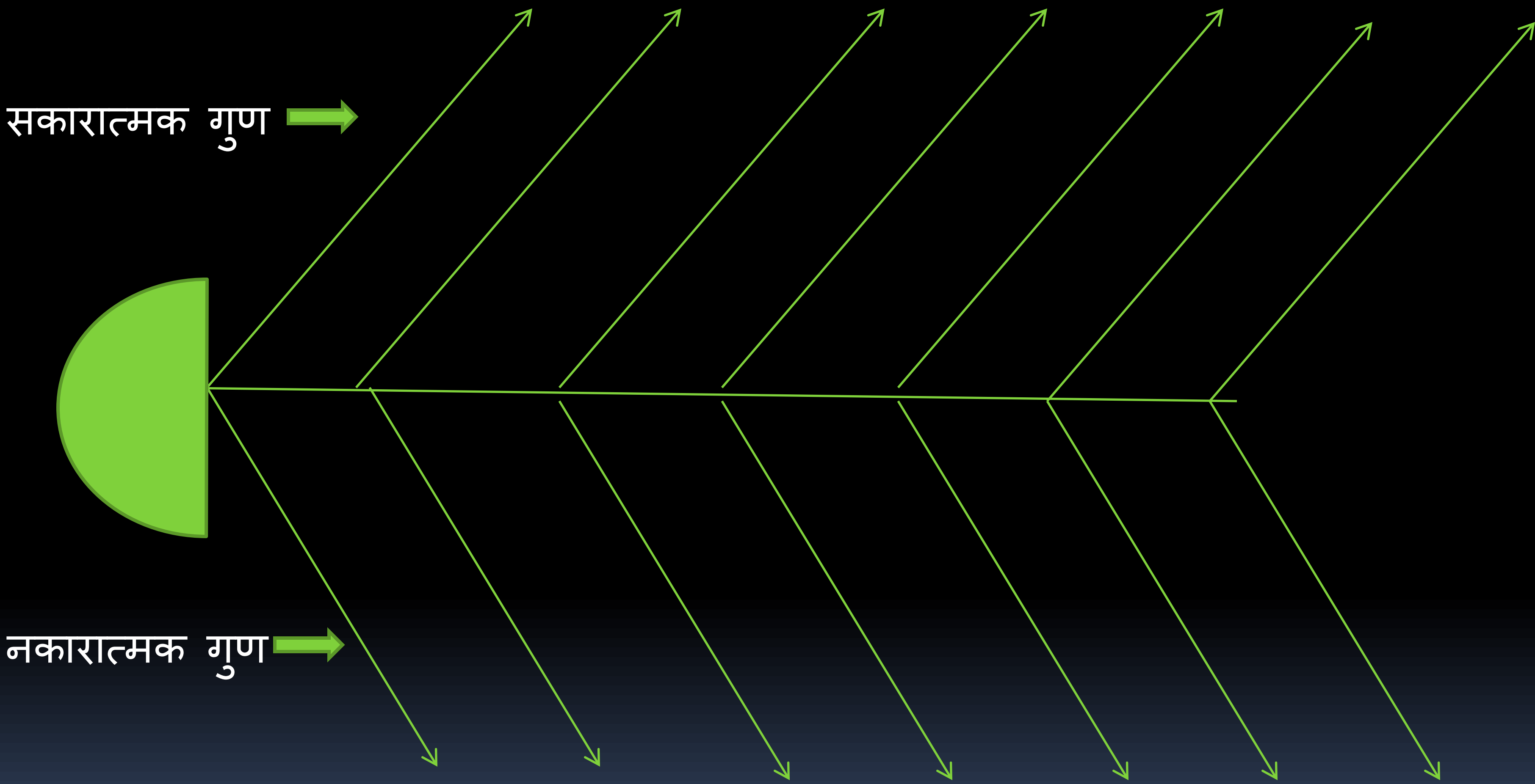

अच्छे एवं बुरे पड़ोसी का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उपर दिए गए आरेख की तरह आप भी अपनी उत्तर पुस्तिका में ऐसी ही आकृति बनाकर उसमें एक तरफ़ पड़ोसी के सकारात्मक गुण और दूसरी तरफ़ नकारात्मक गुण लिखिए |

धन्यवाद